			(B) Minor Courses to be offered by the Departments of Humanities	80 Credits	
Sl. No.	Sem	Type of course	Name of Course	Credit	Marks
1.	i	MJC-1	व्याकरण–संज्ञा, सन्धि नाम धातु, अनुवाद	03	100
2.	ii	MJC-2	काव्य–भगवद्गीता, पूर्वमेघदूतम्, नीतिशतकम्	03	100
3.	iii	MJC-3	संस्कृत–गद्य साहित्य	03	100
4.	iv	MJC-4	व्याकरण–व्यंजन और विसर्ग–सन्धि, लकार एवं अनुवाद	03	100
5.	V	MJC-5	संस्कृत–नाटक	03	100
6.	v	MJC-6	काव्य–शास्त्र	03	100
7.	Vi	MJC-7	व्याकरण–कारक एवं वाच्य	03	100
8.	Vi	MJC-8	संस्कृतसाहित्य काइतिहास	03	100
9.	Vii	MJC-9	श्रीमद्भगवद्गीता	04	100
10.	Viii	MJC-10	व्याकरण–समास–प्रकरण	04	100

Note: The Department may reduce the syllabus of the Minor courses as per the credit distribution The Department concerned may also decide practical course.

14/06/2023

14/6/23

Study Origin.com

MIC- II

संस्कृत काव्य

3 Credits

100 Marks-70+30

उद्देश्य

व्यक्तित्व के विकास के लिए काव्य-साहित्य का सेवन नितांत आवश्यक है। शास्त्रों में वर्णित है–

संसारविषवृक्षस्य द्वे एव मधुरे फले।
काव्यामृत रसास्वादः संगमः सज्जनैः सह।।

छात्र छात्राओं के जीवन में काव्य रूपी अमृत का सेवन उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को परिपक्व व सुदृढ़ बनाने में सहायक है। काव्यों की सूक्तियाँ, रसानुभूति, सौन्दर्यबोध मानव–जीवन को आनन्दित एवं आन्दोलित करने तथा जीवन जीने की कला सिखाने में समर्थ है।साधु–काव्य के सेवन से "सत्यं शिवं एवं सुन्दरम्" का समवेत बोध छात्र/छात्राओं को हो सके–एतदर्थ काव्य का अध्ययन/अध्यापन अपेक्षित है।

Unit	Prescribed Course	No. of lectures
I	भगवद्गीता द्वितीय अध्याय (स्थित प्रज्ञ विवेचन)–श्लोक संख्या–54 से 72 तक	09
II	पूर्वमेघदूतम्–श्लोक संख्या–01 से 20 तक	08
III	नीतिशतकम्–श्लोक संख्या–01 से 20 तक	08
IV	Tutorial	05
	Total	30

Reading List

1. श्रीमद्भगवद्गीता व्याख्याकार–मदनमोहन अगवाल, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान वाराणसी, 1994
2. मेघदूतम, मोतीलाल बुक्स पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स अशोक राजपथ पटना|
3. जनार्दन शास्त्री, भारविकृत किरातार्जनीयम्, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. श्रीमद्भगद्गीता–एस० राधाकृष्णन कृत व्याख्या का हिन्दी अनुवाद, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली–, 1969
5. बाबूराम त्रिपाठी(सम्पा.), भर्तृहरि कृत नीतिशतकम् महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा, 1986
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास–उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।

अधिगम उपलब्धिः–

- छात्र संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे।
- वह संस्कृत साहित्य पद्य की सुगीतात्मकता का सौंदर्यबोध कर सकेंगे।
- उनमें काव्य में प्रयुक्त रस, छंद, अलंकारों को समझने की क्षमता विकसित होगी।
- पद्य में निहित सूक्तियों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होगा।
- छात्रों के शब्दकोश में वृद्धि होने के साथ–साथ वह संस्कृत श्लोकों के शुद्ध और सस्वर उच्चारण के कौशल में निपुण बनेंगे

14/06/2023

14/6/23

StudyOrgin.com